जल : मानवता की अतृप्त प्यास

(Water : Unquenchable thirst of Mankind)

संपादक

संतन कुमार राम

प्रकाशक

रचनाकार पब्लिशिंग हाउस

दिल्ली-110093

प्रकाशक

रचनाकार पब्लिशिंग हाउस
डी-18, गली नं. 9, जगतपुरी विस्तार,
शाहदरा, दिल्ली-110093
मो.: 9839977133, 9910143493

© संतन कुमार राम

मूल्य : 850.00

ISBN : 978-93-87932-44-9

प्रथम संस्करण : 2020

अक्षरान्वयन : रमेश कम्प्यूटर्स, दिल्ली

मुद्रक : आशीष प्रिंटर्स, दिल्ली-110093.

हड़प्पा सभ्यता में जल संरक्षण की अवसंरचनाएँ

डॉ. विकास सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रा. इतिहास, रा. म. स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, गाजीपुर

जल जीवन का प्राण तत्व है। जल है तभी जीवन संभव है अन्यथा की स्थिति में पृथ्वी की दशा भी अन्य ग्रहों सदृश होती। पृथ्वी की दो-तिहाई सतह जल से आवृत्त है, इसी से यह ग्रह अपने में विशिष्ट हो गया; जीवों की उत्पत्ति की दशाएँ बनी, जीवों की उत्पत्ति हुई, क्रमिक विकास हुआ, संस्कृतियाँ और सभ्यताएँ अस्तित्व में आईं।

आरंभिक पाषाणकालीन मानवों के अधिवास के जो भी प्रमाण मिलते हैं वह दर्शाते हैं कि उस काल में मानव पहाड़ों के इर्द-गिर्द बहने वाली छोटी नदियों एवं झीलों के किनारे बसना पसन्द करता था। कालान्तर में मध्य पाषाण काल एवं नवपाषाण काल में वह जल-स्रोतों के आस-पास मैदानों में भी बसना शुरू कर दिया। नवपाषणिक क्रान्ति के चलते कृषि-कर्म सीखने पर मानव के जीवन में गुणात्मक सुधार आया तथा जनसंख्या तेजी से बढ़ने लगी। धातुओं की खोज एवं प्रयोग ने मनुष्य को महाबली बनाने की प्रक्रिया को शुरू कर दिया। अब बस्तियों के लिए स्थायी एवं बड़े जल स्रोतों का महत्त्व बढ़ गया। यह वह समय था जब विश्व में नदियों के किनारे एवं उसकी घाटियों में सभ्यताओं का उत्थान हुआ। भारत में सिन्धु एवं सरस्वती नदी, अरब में दजला तथा फरात, अफ्रीका में नील तथा चीन में हवांगहो तथा यांगटिसीक्यांग नदियों की घाटियों में महान सभ्यताओं का उत्थान हुआ। इन सभ्यताओं ने मानवों की भौतिक प्रगति की नई ईबारत लिखी तथा आधुनिक सभ्यता की नींव रखी। इस क्रम में भारत-भूमि पर विकसित सिन्धु एवं सरस्वती नदी घाटी की सभ्यता जिसे सामान्यतः हड़प्पा सभ्यता के नाम से जाना जाता है के निवासियों ने देश-काल के सापेक्ष एक विकसित जल-प्रबंधन व्यवस्था का निर्माण कर अपनी भौतिक प्रगति की

निशान पाए गए। इसके पास ही खम्भे के अवशेष मिले हैं। इससे ज्ञात होता है कि संभवतः ये लोग घिरनी जेसे यंत्र का प्रयोग करते थे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हड़प्पा सभ्यता में जल संरक्षण हेतु विविध अवसंरचनाओं का कुशलतापूर्वक निर्माण किया गया था जिससे सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से हो जाया करती थी। जल संरक्षण की यह मूल्यवान पारंपरिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपरा कालांतर में देश के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग नामों से जलवायु एवं आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हुई। वर्तमान काल में तेजी से बदलती जलवायु, सूखे एवं गिरते भू-जल स्तर जैसी समस्याओं से निपटने के लिए भी हमारा यह पुरातन ज्ञान उपयोगी एवं प्रासंगिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्मिता पाण्डेय भारत में जल संरक्षण परंपराएँ, योजना, जुलाई 2016, पृ. 27
2. किरण कुमार थपल्याल एवं संकटाप्रसाद शुक्ल, सिंधु सभ्यता, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, संशोधित संस्करण 2003, पृ. 203
3. पार्श्वोद्धृत, पृ. 21
4. पूर्वोद्धृत, पृ. 56
5. अंशुमान द्विवेदी, हड़प्पा सभ्यता एवं संस्कृति, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1999, पृ. 86